International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

जायसी कृत 'पद्मावत' महाकाव्य की ऐतिहासिकता

वरिन्दरजीत कौर

अस्सिटेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग देव समाज कॉलेज फॉर वूमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा में मलिक मोहम्मद जायसी सर्वप्रमुख स्थान रखते हैं। उनके द्वारा रचित महाकाव्य 'पद्मावत' सूफी काव्य धारा का प्रतिनिधि ग्रंथ है। जिसमें चितौड़ के राजा रत्नसेन एवं सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम का वर्णन है। अवधी भाषा में रचित इस ग्रंथ में जायसी कल्पना और इतिहास का अद्भुत सुमेल किया है।

भूमिका

हिन्दी साहित्य में प्रेमाख्यानक काव्य सूफियों की देन है। सूफी कवियों ने हिन्दू घरों में प्रचलित प्रेम कथाओं को आधार बनाकर ग्रंथ लिखे जो हिन्दुओं और मुसलमानों में सद्भावना कायम करने का एक सार्थक प्रयास भी था। सूफी काव्य के केन्द्र में प्रेम तत्व की प्रधानता है। इसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना है अर्थात् इश्क मजाजी से इश्क हकीकी तक पहुंचने की कोशिश है। जायसी जैसे सूफी कवियों ने अपने काव्य ग्रंथों में प्रचलित लोक कथाओं व प्रेम कथाओं के नायक–नायिका के साथ–साथ इतिहास प्रसिद्ध चरित्रों को भी लिया है।

सार : मलिक मुहम्मद जायसी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के अन्तर्गत सूफी काव्य धारा के सर्वप्रमुख व प्रतिनिधि कवि हैं। वह प्रसिद्ध सूफी संत थे और चिश्तिया निजामिया की शिष्य परम्परा में सैयद मुईनुद्दीन के शिष्य थे। इतिहास की दृष्टि से जायसी का समय सल्तनत काल के अंतिम चरण और मुगलकाल के आरम्भिक चरण व उथल–पुथल का काल था। इस सम्बन्ध में विजयदेवनारायण साही लिखते हैं कि उस समय, ''इस्लाम में एक ओर कट्टर पुनस्थानवादियों, महदियों और मुजाहिदों के आन्दोलन उठ खड़े होते हैं। दूसरी ओर अबुलफज़ल और फैज़ी उदार चिन्तक भी सामने आते हैं, जो कट्टरता को ढीला करना आवश्यक समझते हैं। जायसी का युग इस्लामी सामन्तवाद में जबरदस्त रस्साकसी का युग है।''[1] अर्थात् हिन्दू–तुर्क सत्ता संघर्ष के इस युग में जायसी का आविर्भाव होता है।

सूफी मत इस्लाम धर्म का एक अंग है। भारतवर्ष में सूफी साधकों का प्रवेश मुस्लिम जाति के साथ हुआ। मुसलमान सत्ता के सुदृढ़ हो जाने के पश्चात् ये सूफी साधक अन्य मुसलमानों की भांति भारतीय हो गए। सुफियों में मुसलमानों की शरीयत की कठोरता व कट्टरता नहीं बल्कि उनमें उदारता एवं कोमलता विद्यमान थी। भारत के वातावरण, रीति–रिवाज और चिन्तन पद्धति ने इस्लाम धर्म और सूफी मत को अत्यन्त प्रभावित किया। भारतीय परिवेश में सूफी मत का भारतीयकरण हुआ। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने भारत में सूफी मत का प्रचार–प्रसार किया। मुईनुद्दीन चिश्ती के अतिरिक्त कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, निजामुद्दीन औलिया, नसीरूद्दीन महमूद, अब्दुल कादिर, अहमत फारूखी इत्यादि शामिल हैं।

सूफी काव्य के मूल में प्रेम तत्व समाहित हैं। सूफी कवियों की रचनाओं में इश्क हकीकी एवं इश्क मजाजी की भावना निहित है। ''प्रेम सूफी सिद्धान्तों और सूफी काव्य का प्राण है।''[2] प्रेम का शुद्ध मार्ग दिखाते हुए इन्होंने उस समय के समाज में व्याप्त भेदभाव, परस्पर द्वेष व घृणा को खत्म करने तथा उनमें सामंजस्य

कायम करने हेतु भरसक प्रयास अपनी रचनाओं के माध्यम से किए। इस सम्बन्ध में गोबिन्द त्रिगुणापत कहते हैं कि, ''जब हिन्दू और मुसलमान शासकों के मध्य दुर्भाव बढ़ता जा रहा था तब जायसी जैसे सहृदय साधक कवियों ने भारतीय और इस्लामी संस्कृतियों के सामंजस्य का सफल साहित्यिक प्रयास किया था। उनके इस प्रयास ने ही भिन्न होती हुई जनता

को स्नेह और सद्भाव को एक ही सूत्र में बांधे रखा था।''[3] अतः इन सूफी कवियों ने प्रेम को सर्वोपर रखते हुए परस्पर भेदभाव को मिटाने की कोशिश की। जायसी जैसे कवियों ने सूफी सिद्धांतों को भारतीय कथा में पिरो कर हिन्दू हृदय को आकर्षित ही नहीं किया बल्कि हिन्दू–मुसलमान में विद्यमान परस्पर द्वेष तथा अजनबीपन को मिटाया।

सूफी प्रेमाख्यानों में जायसी कृत 'पद्मावत' सर्वश्रेष्ठ रचना है। 'पद्मावत' सन् 1540 ई. में रचा गया जिसमें चित्तौड़गढ़ के राजा रत्नसेन और सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन की पुत्री पद्मावती की प्रेम कथा का वर्णन है।

सिंहल नरेश गन्धर्वसेन की कन्या पद्मावती रूप गुण में अद्वितीय थी। उसके पास हीरामन नाम का एक पालतू तोता था जो अत्यन्त बुद्धिमान था। एक दिन पद्मावती से वह उसके योग्य वर के विषय में चर्चा कर रहा था कि गन्धर्वसेन ने सुन लिया, डर के मारे तोता उड़ गया और उसे एक बहेलिये ने पकड़ लिया। उसने तोते को एक ब्राह्मण को बेच दिया। ब्राह्मण तोते को लेकर चित्तौड़गढ़ के राजा रत्नसेन के पास ले गया और राजा रत्नसेन ने ब्राह्मण से वह तोता एक लाख रुपये देकर खरीद लिया। एक दिन रत्नसेन की रानी नागमती ने तोते से पूछा कि मेरे समान संसार में कोई सुन्दरी और भी है? तोते ने पद्मावती का वर्णन करते हुए बताया कि तुममें और पद्मावती में रात–दिन का अन्तर है। नागमती तोते को मरवाने पर तुल बैठी लेकिन संयोग से तोता बच गया। रत्नसेन के बाहर से लौटने पर उसे सारी कहानी मालूम हुई। तोते से पद्मावती का सौन्दर्य वर्णन सुनकर वह सिंहल की ओर चल पड़ा। वह योगी के वेश में और अपने सैनिकों को भी योगी वेश में साथ ले चला। सिंहल पहुँचने में रास्ते में राजा को अनेक कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी। गन्धर्वसेन से युद्ध हुआ, किन्तु शिव–पार्वती तथा अन्य देवताओं की सहायता से रत्नसेन का पद्मावती से विवाह हो गया। एक पक्षी से नागमती का वियोग संदेश पाकर राजा रन्तसेन चित्तौड़गढ़ पद्मावती के साथ लौट गया। लौटते समय भी उसे बहुत से खतरे उठाने पड़े। नागमती और पद्मावती एक साथ चित्तौड़ में रहने लगी।

रत्नसेन के दरबार में राघव चेतन नामक एक पंडित था। उसे यक्षिणी सिद्ध थी। उसके अवैदिक आचरण पर क्रुद्ध होकर राजा ने उसे देश निकाला दे दिया। राघव चेतन प्रतिशोध की भावना से दिल्ली चला गया। उसने अलाउद्दीन से पद्मावती के सौन्दर्य का वर्णन किया। अलाउद्दीन ने चितौड़ पर चढ़ाई कर दी और छल से रत्नसेन को बन्दी बनाकर दिल्ली ले गया। नागमती के अनुरोध पर उनके सैनिक गोरा बादल सोलह हजार पालकियां लेकर दिल्ली गये। इन पालकियों में सशस्त्र सैनिक छिपे हुए थे। दिल्ली पहुँचकर उन्होंने संदेश भेजा कि अपनी सोलह हजार दासियों के साथ पद्मावती अलाउद्दीन के महल में रहने को तैयार है पर महल में जाने से पहले वह रत्नसेन को मिलना चाहती है। जिसकी अलाउद्दीन ने इजाजत दे दी। पालकी में छिपे सैनिकों ने राजा की बेड़ी काट दी और रत्नसेन चितौड़ लौटने में सफल हुआ। चितौड़ लौटने पर उसे मालूम हुआ कि पद्मावती को फुसलाने के लिए कुंभलनेर के राजा ने एक दूती भेजी थी। इस पर राजा रत्नसेन ने कुंभलनेर पर चढ़ाई कर दी। कुंभलनेर के राजा देवपाल के साथ उसका युद्ध हुआ जिसमें दोनों राजाओं की मृत्यु हो गयी। रत्नसेन के शव के साथ दोनों रानियां नागमती और पद्मावती सती हो गई। उधर अलाउद्दीन ने चितौड़ पर पुनः चढ़ाई की परन्तु किले में प्रवेश करने पर उसके हाथ केवल राख लगी।

'पदमावत' राचना की कथावस्तु को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है – पूवार्द्ध में रत्नसेन पद्मावती के विवाह तक की कथा है, जबकि उत्तरार्द्ध में अलाउद्दीन के साथ संघर्ष की कथा है। पद्मावत का पूर्वार्द्ध काल्पनिक एवं उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक है। जायसी से पूर्व सूफी कवियों की रचनाएं पूर्ण रूप से काल्पनिक कथाएं थी। ''अब तक के सूफी कवियों की रचनाएं केवल कल्पना पर आधारित थी। जायसी ने कल्पना के साथ–साथ ऐतिहासिक घटनाओं का समावेश भी किया.....। 'पद्मावत' में विवाह तक की कथा (पूर्वार्द्ध) पूर्ण रूप से काल्पनिक है। अलाउद्दीन के साथ संघर्ष (उत्तरार्द्ध) का आधार इतिहास है।[4]

जायसी ने 'पद्मावत' की रचना की पूर्व कथा का संयोजन मिथकीय कल्पना के रूप में किया है। सिंहल के कल्पना लोक के निर्माण करने में प्रकृति का स्वच्छंद प्रयोग किया गया है। यह अपने मिथकीय विधान में आसीन तथा परम सौन्दर्य में चिरन्तन गतिशील प्रस्तुत है।

जायसी मिथकीय पुराण कल्पना से इतिहास के यथार्थ का अतिक्रमण नहीं करते, उनका देशकाल से निरपेक्ष आन्तरिक स्वप्नलोक इतिहास का पूरी तरह अपने में तिरोहित किए हुए नहीं है। जायसी ने अपनी रचनात्मक क्षमता से काल्पनिक सृष्टि का उपयोग किया है और उसमें निहित मूलभूत रचनाशीलता का मानवीय जीवन की भाव व्यंजना के स्तर पर प्रयोग हुआ है। ऐतिहासिक खोजों के आधार पर प्रायः मान्य है कि 'पद्मावत' का यह कथानक इतिहास से लिया गया नहीं है। यह अवश्य है कि इतिहासकारों ने इस वृत्तांत को ऐतिहासिक स्वीकार करने में जायसी का सहारा लिया हो, यह सम्भावना मानी जाए। ''जायसी के पूर्व के खुसरो, बरनी, इसाकी जैसे फारसी के वृत्त लेखकों नें अलाउद्दीन की चितौड़ विजय के सन्दर्भ में पद्मिनी का कोई उल्लेख नहीं किया है। इतिहासकार कानूनगो ने अपने 'लीजेण्ड ऑफ पद्मिनी' नामक प्रकाशित व्याख्यान में इन सबके साथ अकबरकालीन फरिश्ता द्वारा निर्दिष्ट पद्मिनी कथा में गोरा–बादल को चतुराई से अलाउद्दीन की कैद से रत्नसिंह की मुक्ति का वर्णन तथा राजस्थानी ख्यालों में इस प्रसंग के वर्णन पर विचार किया है।''5 उक्त संदर्भ में हम यह कह सकते हैं कि यह सारा प्रसंग ऐतिहासिक नहीं है। इसी से यही ज्ञात होता है कि अलाउद्दीन के आक्रमण के पहले चितौड़गढ़ के शासक अमरसिंह थे और आक्रमण के समय उनके पुत्र रत्नसिंह थे।

चाहे 'पद्मावत' कथा पूर्ण रूप से इतिहास आधारित नहीं है परन्तु फिर भी इस रचना में तत्कालीन समय, परिस्थितियों, परिवेश तथा शासनतंत्र सम्बन्धी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारियां उपलबध हैं। जायसी अपने 'पद्मावत' में तत्कालीन बादशाह शेरशाह के बारे में लिखते हैं –

''सूर नवाई नवउ खँड भई। सातउ दीप दुनी सब नई।

तँह लगि राज खरग बर लीन्हा। इसकंदर जुलकरौं जो कीन्हा।

जाति सूर और खांडइ सूरा। और बुधिवंत सबह गुन पूरा।''[6]

अर्थात् शेरशाह दिल्ली का सुल्तान चारों खण्डों में सूर्य की तरह तपने वाला, तलवार व बहादुरी के बल पर अपना राज्य कायम करने वाला वीर योद्धा था। सिकन्दर जुलकनैन की भांति वह महान योद्धा था। वह अति गौरवशाली महान शासक था और उसका न्याय प्रबंध भी उच्चकोटि का था। तत्कालीन शासक शेरशाह के सम्बन्ध में जायसी ने पद्मावत में 'स्तुति खण्ड' में हमें भरपूर जानकारी दी है कि शेरशाह बड़ा बहादुर शासक था। जिसने योग्यता के बल पर पूरी दुनिया में अपना नाम कमाया। वह मानवता का पक्षधर था तथा जिसने हिन्दू मुसलमानों के बीच ईर्ष्या–द्वेष की खाइ को कम करने के भरसक प्रयास किए। इस सम्बन्ध में गोबिन्द त्रिगुणायत लिखते हैं, ''शेरशाह एक योग्य शासक और मानव मात्र का उपासक बादशाह था। उसने युग–युग से चौड़ी होती हुई हिन्दू–मुसलमानों की खाई को अपनी योग्यता और मानवता के सहारे भरने की सफल चेष्टा की।''[7]

इसी प्रकार 'पद्मावत' में अलाउद्दीन का उल्लेख बड़ा विस्तारित रूप से हुआ है। जायसी लिखते हैं –

''दिल्ली नगर आदि तुरुकानु, जहां अलाउद्दीन सुलतानू।

सोन दरैजेहि के टकसारा। बारह बानी परहि दिनारा''[8]

सुल्तान अलाउद्दीन दिल्ली के तुर्कों में प्रधान था जिसकी टकसाल में सोना ढलता था और उसके 12 वर्णी शुद्ध सोने का दीनार चलते थे।'' सुलतान अलाउद्दीन ने ''शाह अल सुलतान'' की उपाधि धारण की थी जो उसके सोने के सिक्कों में अंकित है। वह ऐश्वर्य, वैभव, प्रचण्ड प्रताप एवं रूप की दृष्टि से भी अद्वितीय था।''[9]

जायसी ने अलाउद्दीन के राज्य–विस्तार, उसके अधीनस्थ राजाओं, अमीरों, विशाल सेना आदि का वर्णन किया है। यही नहीं जायसी उसे पुहुमिपति की संज्ञा प्रदान की और यह बताया कि रणथम्भौर का वीर राजा हम्मीर उसी के हाथों मारा गया था।

पातसाहि प्रहुमियति राजा। सनमुख होई न हमीरहि छाजा'

छत्तीस लाघ बुरे तेहि छाजहि। बीस सहस हस्तीदर गाजहि।''[10]

अर्थात् हमें पता चला है कि रतनसेन के साथ युद्ध से पहले (चितौड़गढ़ के हमले से दो वर्ष पहले) अलाउद्दीन ने रणथम्भौर के राजा हमीर को हराया था।

खिलजी वंश का पहला बादशाह अलाउद्दीन बड़ा क्रूर और आतंकी था। हिन्दुओं के प्रति उसका व्यवहार बड़ा ही कठोर था। यही कारण है कि वह हिन्दु राजाओं वाले क्षेत्रों पर अपना अधिकार जमा लेना चाहता था और हिन्दुओं को अपना गुलाम बना लेना चाहता था। इस सम्बन्ध में इतिहासकार अब्दुल वसाफ लिखते हैं कि ''अलाउद्दीन ने खम्भात की खाड़ी पर स्थित खम्भयत नगर को जीत कर वहां के हिन्दुओं को मार कर रक्त की नदियां बहा दी थीं।''[11]

जायसी कृत 'पद्मावत' में यद्यपि ऐतिहासिक पुट तथा जानकारी अवश्य मिलती है। 'पद्मावत' में रत्नसेन, अलाउद्दीन के अतिरिक्त कुछ एक पात्रों को छोड़ कर अन्य सभी पात्र काल्पनिक हैं। वास्तव में जायसी का इतिहास युग यथर्थ से ग्रहण किया हुआ नहीं है, वह कल्पना के स्तर पर कल्पित है। उसके पात्रों, स्थानों के नाम तथा घटना प्रसंगों के संदर्भ ऐतिहासिक हैं पर उनके तथ्यपरक आधार की चिन्ता कवि को नहीं, वह अपने युग के यथार्थ के पूरे परिवेश एवं सन्दर्भ के माध्यम से मानवीय अनुभव के रूप में सत्य की व्यंजना करने में संलग्न है। इस सम्बन्ध में रघुवंश लिखते हैं कि, ''जायसी ने अपनी रचनात्मक क्षमता से काल्पनिक सृष्टि का उपयोग किया है और उनमें निहित मूलभूत रचनाशीलता का मानवीय जीवन की भाव व्यंजना के स्तर पर प्रयोग हुआ है। इतिहास का युग यथार्थ है और हम उसमें घटित होने वाले

पात्रों के चरित्र, व्यवहार, गुणों को, घटना, परिस्थिति और वातावरण को बौद्धिक स्तर पर जानते समझते हैं। जीवन के बीच हमारा अनुभव प्रत्यक्ष संवेदन के रूप में समग्र एवं संश्लिष्ट होता है, पर अपने व्यावहारिक एवं प्रयोजनीय जीवन में यह हम से पीछे खिसकता–छूटता गया है। रचनाकार पुनः प्रकृति के बीच मनुष्य को अनुभव की प्रत्यक्ष एकतान्ता और समग्रता में अभिव्यक्त करने के लिए मिथकीय परिकल्पना का उपयोग उल्टे क्रम से करता है। उसकी रचना के बिम्ब–विधान, प्रतीक–विधान, रूपकों और भाषा के लाक्षणिक व्यंजक प्रयोगों में इस क्रम को देखा पहचाना जा सकता है। जायसी की रचना दृष्टि में यह स्पष्ट है और वह सजग एवं सचेष्ट भाव से 'पद्मावत' के कथा संयोजन में कल्पना के स्तर पर इतिहास के युग बोध और मिथक लोक के अनुभव का सामंजस्य स्थापित कर सके हैं।[12] 'पद्मावत' में दो सामान्तर लोक अंकित हैं, वे एक दूसरे को प्रकाशित कर रहे हैं। एक सिंहल लोक है, कल्पनाओं, स्वप्नों, इच्छाओं, कामनाओं का और दूसरा इतिहास का युग, संघर्ष, युद्धों नीति, मूल्यों और विडम्बनाओं का। 'पद्मावत' के रचना विधान में जायसी ने मिथ एवं इतिहास के आधार पर अपनी अभिव्यक्ति के लिए युग की संस्कृति के यथार्थ के साथ सामाजिक, भौतिक और आध्यात्मिकता का उपयोग किया है।

निष्कर्ष : कह सकते हैं कि इतिहासकार और रचनाकार की दृष्टि में अन्तर रहता है। पात्रों, घटनाओं तथा परिस्थितियों की तथ्यपरकता के आग्रह के कारण इतिहासकार तटस्थ रहने के प्रयत्न में भी युग विशेष की जीवन–प्रक्रिया को दृष्टि विशेष से ही ग्रहण कर पाता है। परन्तु कवि रचनाकार के रूप में तथ्यों से बँधता नहीं, उसके लिए मानवीय परिस्थिति का युगपरक बोध ही प्रमुख रहता है। इसका कारण यह है कि वह युग जीवन को भी व्यापक मानवीय सन्दर्भ में ग्रहण करता है। जायसी कवि होने के आधार पर अपने युग के इतिहास की कल्पना करते हैं, परन्तु वह तथ्यों से निर्दिष्ट नहीं होता। अतः उन्होंने अपने समाज को जिस तटस्थ दृष्टि से देखा है और पूरे परिवेश का निर्माण किया है, वह उनके व्यक्तित्व के माध्यम से तत्कालीन जीवन की विराट कारूणिक स्थिति की अभिव्यक्ति हो सकी है। जायसी की यह कृति ऐतिहासिक पात्रों पर आधारित जरूर है परन्तु इसे प्रमाणिक इतिहास का दर्जा हासिल नहीं है।

पाद टिप्पणी

1. लक्ष्मीचन्द, 'कबीर और जायसी : ग्राम संस्कृति' पृ. 99
प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, 2009
2. मनमोहन सहगल, 'हिन्दी साहित्य का भक्तिकालीन काव्य', पृ. 151
हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2007
3. गोबिन्द त्रिगुणायत, 'जायसी का पद्मावत : काव्य और दर्शन', पृ. 2
साहित्य निकेतन, कानपुर, 1976
4. लक्ष्मीसागर वाष्णेय, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृ. 166
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975
5. रघुवंश, 'जायसी : एक नयी दृष्टि', पृ. 30–31
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002
6. वासुदेवशरण अग्रवाल, 'पद्मावत' : मलिक मुहम्मद जायवी कृत महाकाव्य' पृ. 12, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010
7. गोबिन्द त्रिगुणायत, 'जायसी का पद्मावत : काव्य और दर्शन', पृ. 4
साहित्य निकेतन, कानपुर
8. वासुदेवशरण अग्रवाल, 'पदमवतत' : मलिक मुहम्मद जायसी कृत महाकाव्य' पृ. 312, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010
9. इक्बाल अहमद, 'महाकवि जायसी और उनका काव्य : एक अनुशीलन',
ण पृ. 57, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008
10. वासुदेवशरण अग्रवाल, 'पद्मावत' मलिक मुहम्मद जायसी कृत महाकाव्य', पृ. 315, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010
11. उद्धृत, गोबिन्द त्रिगुणायत : जायसी का पद्मावत : काव्य और दर्शन,

पृ.42, साहित्य निकेतन, कानपुर, 1976

12. रघुवंश, 'जायसी : एक नयी दृष्टि', पृ. 42, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002